रोमियों 13:14 (NKJV):
“परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह को धारण कर लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने के लिये उसकी चिन्ता न करो।”

शलोम! हमारे प्रभु यीशु मसीह, सर्वशक्तिमान के नाम की सदैव स्तुति हो। मैं आपको फिर से स्वागत करता हूँ कि हम प्रभु के जीवनदायी वचनों पर साथ मिलकर मनन करें।

जैसा कि ऊपर की पवित्रशास्त्र की आयत सलाह देती है, हमें शरीर पर ध्यान नहीं देना चाहिए। शरीर पर अधिक ध्यान देने का अर्थ है उसे अत्यधिक प्राथमिकता देना, जिससे उसकी इच्छाएँ भड़कने लगती हैं। और जब शरीर की इच्छाएँ प्रज्वलित होती हैं, तो हम उनके दास बन जाते हैं। शरीर तृप्ति मांगने लगता है, और जब उसे वह नहीं मिलती, तो संघर्ष और कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं।

1) नींद (शरीर की एक इच्छा)

शरीर विश्राम चाहता है, इसलिए कभी-कभी आपको अचानक नींद आने लगती है, भले ही आपने उसकी योजना न बनाई हो। नींद एक स्वाभाविक इच्छा है जो परमेश्वर ने हमें दी है। लेकिन हम जानते हैं कि हर समय

देह पर ध्यान मत दो, न ही उसकी इच्छाओं को भड़काओ

सोने का नहीं होता। यदि हम हमेशा सोते रहें, तो जीवन की अनेक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारियाँ और अवसर हाथ से निकल जाएँगे।

नीतिवचन 20:13 (NKJV):
“नींद से प्रेम न कर, नहीं तो तू निर्धन हो जाएगा; अपनी आँखें खोल, और तू रोटी से तृप्त होगा।”

यह वचन संतुलन के महत्व को दर्शाता है। नींद शारीरिक विश्राम के लिए आवश्यक है, लेकिन आलस्य या अत्यधिक नींद गरीबी लाती है—भौतिक और आत्मिक दोनों। हमें समय और ऊर्जा के अच्छे भण्डारी बनने के लिए बुलाया गया है।

इफिसियों 5:16 (NKJV) हमें समय का सदुपयोग करने की शिक्षा देता है—“समय को सुधार कर चलो, क्योंकि दिन बुरे हैं।”

धार्मिक अंतर्दृष्टि:
नींद परमेश्वर का वरदान है, परंतु जब हम इसे इतना महत्व देते हैं कि यह हमारी ज़िम्मेदारियों और आत्मिक कर्तव्यों को दबा दे, तब यह मूर्तिपूजा का रूप ले लेती है। हमें जागते और

देह पर ध्यान मत दो, न ही उसकी इच्छाओं को भड़काओ

प्रार्थना करते रहना है—आत्मिक और शारीरिक दोनों रूप में—ताकि आराम की इच्छा हमारी आत्मिक सजगता को कमज़ोर न करे।

2) भोजन (शरीर की एक इच्छा)

भूख शरीर की एक अन्य प्रबल इच्छा है। हर व्यक्ति भूख और प्यास महसूस करता है। और इस इच्छा को पूरा करने में एक प्रकार की संतुष्टि मिलती है। लेकिन यदि आत्म-संयम न हो, तो यह इच्छा अत्यधिक भोजन, मोटापा या स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की ओर ले जाती है।

नीतिवचन 23:20–21 (NKJV):
“दाखमदिरा पीने वालों और मांस खाने वालों के संग न रहना; क्योंकि पियक्कड़ और पेखुड़ कंगाल हो जाते हैं, और उनींदापन से मनुष्य चिथड़ों में लिपटा रहता है।”

भोजन परमेश्वर का उपहार है
(1 तीमुथियुस 4:4–5 (NIV): “क्योंकि जो कुछ परमेश्वर ने रचा है वह अच्छा है…”),
लेकिन जब भोजन का उपयोग मन की तृप्ति या पलायन के लिए होता है, तभी पाप प्रवेश करता है।

धार्मिक अंतर्दृष्टि:
भोजन की इच्छा उचित है, परंतु संयम अनिवार्य है। यीशु ने स्वयं चालीस दिन तक उपवास किया (मत्ती 4:2), यह示◌ाता है कि आत्मा भोजन से भी अधिक महत्वपूर्ण है।
1 कुरिन्थियों 10:31 हमें सिखाता है—“तुम जो कुछ भी करो… सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।”

3) यौन अनैतिकता (शरीर की एक इच्छा)

यौन इच्छा भी एक शक्तिशाली शारीरिक इच्छा है। नींद और भोजन की तरह यह भी परमेश्वर द्वारा प्रदत्त है—परंतु इसका उपयोग केवल विवाह के भीतर होना चाहिए।

श्रेष्ठगीत 3:5 (NKJV):
“मेरे प्रेम को तब तक न जगाओ, जब तक कि उसे स्वयं प्रसन्नता न हो।”

1 कुरिन्थियों 7:2–5 (NIV):
“हर पुरुष अपनी पत्नी के साथ और हर स्त्री अपने पति के साथ यौन संबंध रखे…”

परमेश्वर ने यौन इच्छा को विवाह के भीतर प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में बनाया है। विवाह के बाहर यह पाप बन जाती है।

इब्रानियों 13:4 (NIV):
“विवाह सब में आदर के योग्य है… क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और व्यभिचारिणियों का न्याय करेगा।”

धार्मिक अंतर्दृष्टि:
यौन इच्छा बुरी नहीं है, परंतु इसका नियंत्रण आवश्यक है।
1 थिस्सलुनिकियों 4:3–5 सिखाता है कि हमें अपने शरीर को पवित्र और आदरणीय रीति से नियंत्रित करना चाहिए।
यीशु ने भी मत्ती 5:28 में चेतावनी दी कि केवल वासना से देखना भी पाप है।

हम देह की इच्छाओं के आगे झुकना कैसे बंद करें?

हमें अपने आपको उन सभी प्रलोभनों से दूर रखना चाहिए जो हमें पाप की ओर ले जाते हैं—जैसे अशुद्ध बातचीत या अश्लील विषय।

इफिसियों 5:3 (NKJV):

“व्यभिचार और हर प्रकार की अशुद्धता… तुम में नाम तक न लिया जाए।”

नीतिवचन 26:20 कहता है कि जैसे लकड़ी के बिना आग बुझ जाती है, वैसे ही प्रलोभन भी अपने आप समाप्त हो जाते हैं जब हम ‘ईंधन’ हटाते हैं।

यीशु ने कहा:
मत्ती 18:8–9 (NIV)—“यदि तेरे हाथ या तेरे पैर तुझे गिराते हों, तो उन्हें काट कर फेंक दे…”

हमें रोमांटिक, अश्लील या अनैतिक सामग्री वाले मनोरंजन से भी दूर रहना चाहिए।

फिलिप्पियों 4:8 हमें शुद्ध, उत्तम और प्रशंसनीय बातों पर मन लगाने की शिक्षा देता है।

निष्कर्ष:

शरीर की इच्छाओं पर विजय प्राप्त करना एक निरंतर आत्मिक यात्रा

है। हमें आत्मा के अनुसार जीवन जीने के लिए बुलाया गया है।

रोमियों 8:5–6 (NIV):
“जो लोग शरीर के अनुसार चलते हैं, वे शरीर की बातों पर मन
लगाते हैं; परन्तु जो आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं… आत्मा का मन जीवन और शांति है।”

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से हम इन इच्छाओं पर विजय प्राप्त करें और पवित्र, आत्म-संयमी जीवन जीयें, ताकि हमारे जीवन द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।

परमेश्वर आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp